॥ भाषा-संस्कृति विभाग ॥

दास्तानगोई क्लैक्टिव तथा भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश

प्रस्तुत करते हैं

शिमला में तीन शामें

दास्तान – ए – चौबोली

10 सितम्बर : 5.30 बजे

दास्तान – ए – राग दरबारी

11 सितम्बर : 5.30 बजे

दास्तान – ए – कर्ण अज़ महाभारत

12 सितम्बर : 5.30 बजे

गेयटी थियेटर दि माल, शिमला

आप सादर आमन्त्रित हैं

दास्तानगोई

दास्तानगोई किस्सा कहानी कहने की एक कला है। यह कला आज से लगभग एक हज़ार साल पहले अरबी नायक अमीर हम्ज़ा के शौर्य और साहसिक कार्यों के इर्द-गिर्द बुनी कहानियों के रूप में विकसित हुई और देखते ही देखते यह परम्परा बोस्निया, मोरोक्को, अल्जीरिया से होती हुई चीन तक फैल गई। परन्तु ये कहानियाँ सबसे अधिक लोकप्रिय तब हुईं जब ये उर्दू भाषा का हिस्सा बनीं। यह कला 19वीं शताब्दी में उत्तर भारत में अपने चरम पर पहुँची। परन्तु सन् 1928 में आखिरी बड़े किस्सा गो मीर बक़ार अली की मृत्यु के साथ ही इस विधा का भी अवसान हो गया।

आधुनिक काल में क़िस्सागोई की कला का पुनर्जागरण उर्दू के दो विद्वानों, एस. आर. फ़ारूक़ी और महमूद फ़ारूक़ी के प्रयास से हुआ। उन्होंने कहानी-कला की इस विधा का आधुनिक रूप विकसित किया। आधुनिक समय में दास्तानगोई का पहला प्रदर्शन मई 2005 में किया गया । उसके बाद से महमूद फ़ारूक़ी और उनके साथियों ने विश्वभर में 1500 से अधिक बार दास्तानगोई के प्रदर्शन किये हैं। वर्ष 2009 के बाद उन्होंने अपने दल को और बढ़ाया है और आज उनके दल में 16 सदस्य हैं जो विश्वभर में दास्तानगोई का मंचन करते हैं।

दास्तान-ए-चौबोली

यह दास्तान विजयदान देथा द्वारा लिखी एक मूल राजस्थानी लोककथा का दास्तानगोई में रूपान्तरण है। मिशीगन यूनिवर्सिटी की शोधकर्ता क्रिस्टी मायरिल ने इस दास्तान का राजस्थानी से अंग्रेज़ी में अनुवाद किया, जिसका उर्दू अनुवाद सन् 2013 में हुआ। उर्दू कथा को एक दास्तान के रूप में महमूद फ़ारूक़ी ने परिवर्तित किया है। राजकुमारी चौबोली ने प्रण लिया है कि वह केवल उस व्यक्ति से विवाह करेगी जो उसे एक रात के अन्तराल में चार बार बोलने को विवश कर देगा। सत्रह बार चौबीस राजकुमारों ने प्रयास किया लेकिन असफल रहे और परिणामतः अश्वों के लिए चारा पीसने वाली कालकोठरी में सड़ रहे हैं। एक बहादुर और शूरवीर ठाकुर, जो अपनी पत्नी की नथ के बीच से रोज़ 108 बाणों को पार कर देता है, राजकुमारी के समक्ष अपना भाग्य आज़माना चाहता है। उसके साथ क्या होता है? क्या वह चौबोली को जीत पाता है? कहानी के भीतर कहानी और उस कहानी के भीतर एक अन्य कहानी को समोए हुए दास्तान-ए-चौबोली हास्य-विनोद, व्यंग्य, कटाक्ष और गीतात्मकता के साथ भारतीय जीवन का चित्रण करती है।

अवधिः 60 मिनट
रूपान्तर एवं निर्देशनः महमूद फ़ारूक़ी
अभिनयः महमूद फ़ारूक़ी और दरैन शहीदी

दास्तान-ए-राग दरबारी

यह दास्तान आधुनिक भारत के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्य उपन्यास 'राग दरबारी' का दास्तानगोई में रूपांतरित किस्सा है। इसी शीर्षक से लगभग पचास वर्ष पूर्व प्रकाशित श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास ग्रामीण जीवन और राजनीति की कठोर वास्तविकता के चित्रण के लिए शीघ्र ही एक सर्वश्रेष्ठ व्यंग्य के रूप में स्वीकार किया गया। आज़ादी के बाद 60 के दशक में भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार और राजनीति का व्यंग्यपूर्ण चित्रण आज भी उतना ही प्रभावी है। इस उपन्यास की हज़ारों प्रतियाँ विक्रय हो चुकी हैं और साथ ही इसी उपन्यास पर आधारित एक धारावाहिक 'दूरदर्शन' पर भी प्रसारित किया जा चुका है।

हिन्दी साहित्य जगत् पर 'राग दरबारी' का प्रभाव सर्वमान्य है, किन्तु लोकप्रिय साहित्य एवं संस्कृति पर भी इसका प्रभाव गहरा है। 'शोले' फ़िल्म की तरह इस उपन्यास के पात्र, इसके एक-पंक्तिक संवाद और चरित्र-चित्रण के बहुत से अनुरक्त प्रशंसक हैं, जिन्हें इसके कई अंश कण्ठस्थ हैं। यह पहली बार है जब इस उपन्यास का मंचन किया जा रहा है। दास्तान के स्रोत कई हैं – श्रीलाल शुक्ल की कृतियाँ, प्रसिद्ध कवि नागार्जुन, मध्यकालीन उर्दू व्यंग्यकार ज़तली और सौदा, दार्शनिक प्लेटो, मैक्यावली और इब्र-ए-ख़ल्दून तथा कुछ आधुनिक कवि जैसे केदारनाथ सिंह और फ़ैज़। इन सबके साथ उर्दू के महान् आधुनिक हास्य लेखक मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी की रचनाओं का भी दास्तान में उपयोग किया गया है, जिसमें एक ऐसी कहानी बुनी गई है जो शुक्ल के समय के साथ-साथ हमारे समय के सच को भी कहती है।

अवधिः 120 मिनट
अभिनयः महमूद फ़ारूक़ी और दरैन शहीदी
लेखक एवं निर्देशकः महमूद फ़ारूक़ी
निर्माताः अनुशा रिज़वी

दास्तान-ए-कर्ण अज़ महाभारत

कृष्ण की गोद में सिर रखकर प्राण त्यागने से पूर्व कर्ण ने एक अन्तिम प्रश्न पूछा था-'क्या मैं भी अर्जुन की भान्ति लोकप्रिय बन पाऊँगा?'; इस पर कृष्ण ने उत्तर दिया-'तुम्हारी लोकप्रियता अर्जुन की लोकप्रियता से अधिक समय तक रहेगी।' हिन्दुस्तान जन्नत निशान के महानतम नायकों में से एक, कर्ण के जीवन तथा युग पर आधारित दास्तानगोई की यह प्रस्तुति मूल संस्कृत में महाभारत के साथ-साथ फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी और मराठी में उन पर लिखे साहित्य को संजोये हुए है। अकबर के समय में किए गए महाभारत के फ़ारसी अनुवाद- रज़्मनामा; 300 वर्ष पूर्व तोताराम शयन द्वारा किए गए महाभारत के उर्दू काव्य-रूपान्तर; रामधारी सिंह दिनकर की कृति रश्मिरथी सहित शिवाजी सावन्त, इन्तेज़ार हुसैन व इरावती कर्वे की रचनाओं; कुर'आन; गीता के उर्दू रूपान्तर तथा अन्य कई कृतियों को

इस दास्तान का आधार बनाया गया है। दो घण्टे की यह प्रस्तुति आधुनिक भारत में एकल प्रस्तुतियों के मंचन में बेहद महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रस्तुति की प्रमुख भाषा उर्दू है, लेकिन इसमें संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी और अरबी भाषा का प्रयोग भी प्रभावी ढंग से किया गया है। यह एकल प्रस्तुति लगभग दो घण्टे की समयावधि की है। इतनी लम्बी प्रस्तुति का प्रयास एक लम्बे समय, सम्भवतः विगत सौ वर्ष पूर्व से नहीं किया गया है।

अवधिः 100 मिनट
रूपान्तर एवं अभिनयः महमूद फ़ारूक़ी

कलाकार परिचय

महमूद फ़ारूक़ी एक पुरस्कृत लेखक एवं अभिनेता हैं। दास्तानगोई के पुनर्प्रवर्तन के इनके प्रयासों के लिए केन्द्र सरकार की संगीत नाटक अकादमी ने इन्हें बिस्मिल्ला ख़ान युवा पुरस्कार से नवाज़ा है। सन् 1857 की क्रान्ति पर इनकी पुस्तक, Besieged Voices from Delhi 1857 को इंडियन एक्स्प्रेस ग्रुप ने कथेतर साहित्य की श्रेणी में उत्कृष्ट कृति मानते हुए रामनाथ गोयनका पुरस्कार प्रदान किया था। मिशिगन (अमेरिका) और बर्कले (कैलिफोर्निया) के विश्वविद्यालयों में ये विज़िटिंग फ़ैलो रहे हैं तथा ऑक्स्फ़ोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में भारत से रोडज़ स्कॉलर रह चुके हैं। इनकी नवीनतम कृति है। A Requiem for Pakistan: The World of Intizar Hussain। इनका विवाह पीपली लाइव की लेखक-निर्देशिका अनुशा रिज़्वी से हुआ है तथा वर्तमान में ये नई दिल्ली में निवास करते हैं।

दरैन शहीदी एक पुरस्कृत पत्रकार और टीवी एंकर हैं। इस व्यवसाय में गत 25 वर्षों में इन्होंने बहुत-सी संस्थाओं में कार्य किया है, जिनमें प्रमुख हैं : बीबीसी, ई. एस. पी. एन., स्टार स्पोर्ट्स, एन. डी. टी. वी., स्टार न्यूज़ और आई. बी. एन.-7 । वर्तमान में ये 'डिजिटल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म गोन्यूज़ 24X7' के प्रमुख हैं। वर्ष 2011 से ये दास्तानगोई दल के सदस्य हैं। भारत और विदेशों में ये 100 से अधिक बार इस विधा का मंचन कर चुके हैं।

अनुशा रिज़्वी 'दास्तानगोई' की एक्ज़ेक्यूटिव प्रोड्यूसर हैं तथा हिन्दी फ़ीचर फिल्म 'पीपली लाइव' की लेखक-निर्देशिका हैं।